तीन कलीय शक्ति प्रवर्तक

तीन कलीय शक्ति प्रवर्तक, तीन एक कलीय शक्ति प्रवर्तकों का संयुक्त रूप होता है। यह प्रवर्तक भी अर्द्ध-तरंग प्रारूपी भी हो सकता है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है। पूर्ण तरंग प्रारूपी भी जैसा कि में दर्शाया गया है परन्तु इसका सेतु संयोजन ही समान्य उपयोग में है। जैसा की

(i)- अनियन्त्रित द्विदिशकाली प्रारूपी
(ii)- अर्द्ध नियन्त्रित द्विदिशकाली प्रारूपी
(iii)- पूर्ण नियन्त्रित द्विदिशकाली प्रारूपी

जिनमें क्रमशः 6 शक्ति डायोड का अनियन्त्रित SCR तीन शक्ति डायोड तथा तीनी तीन नियंत्रित SCR तथा 6 नियन्त्रित SCR में लगाये जाते हैं।